International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 184-187

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 184-187
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-09-2019
Accepted: 26-10-2019

Dr. Arun Kumar Porel
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Syamsundar College, Shyamsundar, Bardhaman, West Bengal, India

Corresponding Author:
Dr. Arun Kumar Porel
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Syamsundar College, Shyamsundar, Bardhaman, West Bengal, India

वैज्ञानिक दृष्टिकोण में संस्कृत भाषा का विज्ञान में महत्त्व

Dr. Arun Kumar Porel

सारांश
आज भारत कई बड़ी समस्याओं का सामना कर रहा है और ये सिर्फ विज्ञान के द्वारा ही सुलझाई जा सकती है। अगर हमें विकास करना है तो हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण को देश के कोने-कोने तक पहुंचाना होगा। यहॉ विज्ञान से मतलब भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीवन विज्ञान से नही है बल्कि पूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से है। हमें लोगों को तार्किक व प्रश्नाकूल बनाना होगा और अंधविश्वासों व खोखली रीती-रिवाजों को खत्म करना होगा। भारतीय संस्कृति के आधार में संस्कृत भाषा है। संस्कृत भाषा के बारें में एक बड़ी भ्रान्ति ये है कि यह केवल मंदिरों या धार्मिक आयोजनों में मंत्रोच्चार के लिए है। जबकि यह संपूर्ण संस्कृत साहित्य के 5 प्रतिशत से भी कम है। संस्कृत साहित्य के 95 प्रतिशत से अधिक हिस्से का धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। जबकि इसका संबंध दर्शन, न्याय, विज्ञान, साहित्य व्याकरण, ध्वनि-विज्ञान निर्वचन आदि से है। यहॉ तक कि संस्कृत स्वतंत्र चिन्तकों कि भाषा थी जिन्होंने अपने समय में कई महत्त्वपूर्ण प्रश्न खड़े किए और जिन्होंने विभिन्न विषयों पर विभिन्न विचार व्यक्त किए। वास्तव में प्राचीन भारत में संस्कृत हमारे विज्ञानिकों कि भाषा थी। निःसंदेह आज हम विज्ञान के क्षेत्र में दूसरे देशों कि तुलना में पीछे है, लेकिन एक समय था जब भारत पूरे विश्वभर में अग्रणी था।

मूल शब्दः वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संस्कृत भाषा, ध्वनि-विज्ञान, साहित्य व्याकरण

प्रस्तावना
''संस्कृत'' शब्द का अर्थ होता है- पूर्ण, संपूर्ण, शुद्ध और परिष्कृत। इसे ''देववाणी'' (देवताओं की भाषा) भी कहा गया है। संस्कृत हमारे दार्शनिकों वैज्ञानिकों गणितज्ञों, कवियों, नाटककारों, व्याकरण आचार्यो आदि की भाषा थी। व्याकरण के क्षेत्र में पाणिनी और पंतजली (अष्टाध्यायी और महाभाष्य के लेखक) के समतुल्य पूरे विश्वभर में कोई दूसरा नहीं है। खगोलशास्त्र और गणित के क्षेत्र में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कर के कार्यो ने मानव जगत को नवीन मार्ग दिखाया। वहीं औषधी के क्षेत्र में चरक और सुश्रुत ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। दर्शन के क्षेत्र में गौतम (न्याय व्यवस्था के जन्मदाता) शंकराचार्य बृहस्पति आदि ने पूरे विश्वभर में विस्तृत दार्शनिक व्यवस्था को प्रतिपादित किया है।
साहित्य में संस्कृत का योगदान सबसे महत्त्वपूर्ण है। कालिदास का लेखन (शकुन्तला, मघदूत आदि) भवभूती (मालती माधव, उत्तर रामचरित आदि) और वाल्मीकी, व्यास आदि के महाकाव्य जिन्हें पूरे विश्वभर में जाना जाता है। अपने इस बातचीत मे मैं संस्कृत के साहित्यक पक्ष कि चर्चा करूंगा जो विज्ञान से जुड़ा हुआ है।
आगे बढ़ने से पहले, इस बातचीत के दौरान मैं विषय से विषयान्तर करना चाहूँगा। असल में इस पूरी बातचीत के दौरान मैं कई विषयान्तर लूँगा और शायद शुरू में आपको लगे कि इसका विषय से कोई संबंध नहीं है, लेकिन अंत में आप पायेंगे कि विषय से इसका गहरा संबंध है।
पहला विषयान्तर ये कि - भारत क्या है ? हालंकि हम भारतीय हैं अधिकतर लोग अपने देश के बारे में नहीं जानते हैं फिर भी मैं कोशिश करता हूँ।

प्राचीन भारत की विभिन्न संस्कृति
हालांकि उत्तर अमेरिक (यू.एस.ए. और कनाड़ा) नवीन अप्रवासियों का देश है, जहां पिछले 10 हजार सालों में लोग आये है। भारत में रहने वाले लगभग 95 प्रतिशत लोग अप्रवासियों के वंशज है, जो मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिम से आये थे और कुछ उत्तर-पूर्व से। यह हमारे देश को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। लोग असुरक्षित जगहों से सुरक्षित जगहों कि ओर पलायन करते हैं, ये बहुत स्वभाविक है क्योंकि हर आदमी आरामदायक स्थिति में रहना चाहता है। भारत में आधुनिक उद्योगों के आने से पहले यहॉ चारों तरफ खेतिहर समाज था और भारत इन सबके लिए स्वर्ग कि तरह था क्योंकि खेती के लिए जरूरी सारी आवश्यकताएँ यहॉ थी।

समतल जमीन उपजाऊ मिट्टी, सिंचाई के लिए पर्याप्त जल, समजलवायु आदि। अफगानिस्तान का उदाहरण दिया जा सकता है, जहॉ कठिन परिस्थितियाँ हैं, जहां के पहाड़ साल में कई महीनें वर्फ से ढ़के रहते हैं। जहां कोई एक फसल भी नहीं उगा सकता इसलिए लगभग सारे अप्रवासी व हमलावर भारत में बाहर से आये।

तभी उर्दू के महान शायर फिराक गोरखपुरी ने लिखा भी है-

''सर जमीने-ए-हिन्द पर एक अवाम-ए-आलम कि

फिराक काफिले गुजरते गए हिन्दुस्तान बनता गया''

अर्थात इस हिन्दुस्तान कि जमीन से लोगों के कई काफिलें गुजरे है और धीरे-धीरे भारत आकार लेता रहा। अब सवाल ये उठता है कि भारत के मूलनिवासी कौन है ? एक समय में विश्वास किया जाता था कि द्रविड़ भारत के मूल निवासी हैं हालांकि, सामान्यतः यह स्वीकार किया जाता है कि भारत के वास्तविक मूलनिवासी पूर्व-द्रविड़ वंशज थे, जिनके बंशज मुण्डा भाषा बोलने वाले थे। जो वर्तमान में छोटा नागपुर, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल आदि नवीन क्षेत्रों में रहते हैं। भारत के संपूर्ण जनसंख्या में इनकी जनसंख्या मात्र 5 से 7 प्रतिशत है। बाकी बचे 95 प्रतिशत लोग भारत में आज अप्रवासियों के पूर्वज है, जो मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिम से आये थे। ये भी माना जाता है कि द्रविड़ भी बाहर से आये थे, सम्भवतः वर्तमान पाकिस्तान और अफगानिस्तान के इलाकों से।

हम भारत की तुलना चीन से कर सकते है, जो जनसंख्या और क्षेत्रफल दोनों ही मामलों में भारत से बड़ा है। चीन कि जनसंख्या 1.3 अरब है, वहीं हमारी जनसंख्या 1.15 अरब है। चीनियों में मंगोलो वाले लक्षण देखें जा सकते हैं जिनकी अपनी एक सामान्य लिखित लिपी **है।** 95 प्रतिशत चीनी एक खास समूह से जुड़े हैं जिन्हें ह्वांन चीनी कहते है। हालांकि, चीनियों में व्यापक रूप से एक रूपता देखी जा सकती है।

वहीं दूसरी तरफ जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भारत में बड़े तार पर विविधता है और इसका सबसे बड़ा कारण पिछले, हजारों सालों में बड़े पैमाने पर हुए पलायन व हमले हैं। विभिन्न अप्रवासी जो भारत में आये वो अपने साथ विभिन्न संस्कृति, भाषाए, धर्म आदि लेकर आये। जो भारत में बड़े विविधता का कारण बने।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि भारत कृषि के लिए हर तरह से उपयुक्त था। सिर्फ कृषक समाज में हीं कोई संस्कृति, कला और विज्ञान पनप सकता है। मनुष्य जब तक शिकारी था, तब तक ये संभव नहीं हो पाया क्योंकि मनुष्य अपना पूरा समय भोजन के लिए शिकार करते हुए गुजार देता था। जीने के लिए संघर्षपूर्ण बाध्यता ने उसे सुबह से शाम तक इसी काम में व्यस्त रखा, ऐसे में उसके पास बिल्कुल समय नहीं था कि तो कुछ और सोच सके। ऐसे में कृषक जीवन में ही उसके पास कुछ सोचने का समय मिल पाता था। प्राचीन भारत में ढ़ेर सारे बौद्धिक क्रियाकलाप होते थे। हम हमारे साहित्य में सैकड़ों सशत्रार्थ के संदर्भ देखते हैं। जिसमें एक बड़ी सभा में बौद्धिक-चिंतक विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श करते थे। संस्कृत में हजारों किताबें लिखी गयी थीं, लेकिन इतने लंबे समय बाद मात्र 10 प्रतिशत किताबें ही बची है।

मेरे विषयान्तरण का कारण यह बताना था कि यह भारत कि भौगालिक स्थितियॉ ही थी जिसने हमारे पूर्वजों को विज्ञान और संस्कृत के क्षेत्र में ढ़ेरों प्रगति करने के योग्य बनाया। गणित खगोलशास्त्र, औषधी अभियांत्रिकी आदि क्षेत्रों में हम पूर्वजों के विशिष्ट उपलब्धियों पर चर्चा करने से पहले यहां प्राचीन भारत में संस्कृत का विज्ञान के विकास मे दो महत्त्वपूर्ण योगदान की चर्चा करना जरूरी है।

1. इस भाषा के जन्मदाता व्याकरण आचार्य पाणिनी माने जाते हैं जिन्होंने संस्कृत को इतना सक्षम बनाया कि इसमें तकनीकि विचारों को पूरे विशुद्धता, तार्किकता और सुस्पष्टता के साथ व्यक्त किया जा सके। विज्ञान में परिशुद्धता कि आवश्यकता होती हैं साथ हीं विज्ञान को एक लिखित भाषा कि जरूरत होती है जिसमें विचारों को पूरे स्पष्टता और तार्किकता के साथ व्यक्त किया जा सके।

2. असल में संस्कृत सिर्फ एक भाषा नहीं है, बल्कि संस्कृत के कई रूप हैं। वर्तमान में जो संस्कृत प्रचलित है वो पाणिनी संस्कृत है। जो शास्त्रीय संस्कृत के नाम से भी जाना जाता है और जिसे हमारे स्कूलों और विश्वविद्यालयों में आज पढाया जाता है। साथ हीं ये नई भाषा है जिसमें हमारे वैज्ञानिकों ने महत्वूपर्ण लेखन किया है।

ऋगवेद का लेखन प्राचीन संस्कृत में हुआ है जिसका लेखन 2000 ई. पू. के आस-पास हुआ हैं इसका लेखन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के मौखिक परम्परा पर आधारित है। ऋगवेद हिन्दू समाज का सबसे पवित्र ग्रन्थ है। जिसमें 1028 ऋचाएं हैं, जो विभिन्न प्राकृतिक देवताओं को संबोधित किए गए हैं, जैसे- इन्द्र, अग्नि, सूर्य, सोम, वरूण आदि।

समय के साथ भाषा भी बदलती है। बिना अच्छे स्पष्टीकरण के आज शेक्सपीयर के नाटकों को समझना कठिन है क्योंकि शेक्सपीयर ने इनका लेखन 16**वीं** सदी में किया था और तब से आज तक अंग्रेजी भाषा बहुत बदल गई है। शेक्सपीयर के लेखन के ढ़ेरों व अभिव्यक्तियॉ आज उतने प्रचलन में नहीं है जितना शेक्सपियर के समय थी।

संस्कृत में बदलाव 2000 ई. पू. से ही शुरू हो गया था। जब ऋगवेद का लेखन 500 ई.पू. के आस-पास हुआ। 5वीं सदी ई.पू. में महान बौद्धिक पाणिनी जो विश्वभर में अब तक वे सबसे बड़े व्याकरण आचार्य हैं, इसी समय एक पुस्तक लिखी थी "अष्टाध्यायी''। इस पुस्तक में पाणिनी ने संस्कृत के निश्चित नियमों का उल्लेख किया है।

पाणिनी संस्कृत

पाणिनी ने जो सबसे महत्पूर्ण काम किया वो यह था कि उन्होने अपने समय में प्रचलित संस्कृत भाषा का गहराई से अध्ययन किया और उसके बाद उसे परिष्कृत परिशुद्ध और व्यवस्थित किया जिसके कारण वह एक तार्किक, परिशुद्ध और परिष्कृत भाषा बन सकी। इस तरह से पाणिनी ने संस्कृत को एक ऐसा विकसित व सशक्त वाहक बना दिया जिसमें तकनीकि विचारों को अत्यंत शुद्धता व स्पष्टता के साथ व्यक्त किया जा सके। ''अष्टाध्यायी'' के गहराई में मैं नहीं जा रहा हूँ, लेकिन इस संबंध में यहॉ एक छोटा उदाहरण दिया जा सकता है:-

अंग्रेजी के 'A' से 'Z' तक के वर्णो को किसी तार्किक आधार पर व्यवस्थित नहीं किया गया है, इसके पीछे कोई विशेष कारण नहीं है कि F, G से पहले क्यों आता है या P, Q से पहले क्यों आता है? अंग्रेजी के वर्णो को यादृच्छता के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। जबकि दूसरी तरफ, पाणिनी ने अपने पहले 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा को अत्यंत वैज्ञानिक व तार्किक आधार पर व्यवस्थित किया है। जिसके क्रमबद्धता में ध्वनियों का गहरा अवलोकन किया गया है।

उदाहरण के तौर पर स्वर- जैसे- अ, आ, अ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ को मुख (मुंह) के आकार के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। जैसे कि - अ और आ का उच्चारण गले से इ और ई का उच्चारण तालु से व उ और ऊ का उच्चरण होठों से होता है। ठीक इसी तरह से व्यंजनों को भी वैज्ञानिक तरीके से जमाया गया है। क वर्ग का उच्चारण गले से च वर्ग का उच्चारण तालु से त वर्ग का उच्चारण दांतों और प वर्ग का उच्चारण होठों से होता है।

मैं पूरी निर्भीकता के साथ कहना चाहता हूँ कि संस्कृत के अलावा विश्व के किसी और भाषा के वर्णो को इस तरह से तार्किक व वैज्ञानिक रूप से नहीं जमाया गया है। इस तरह से हम देखते है कि हमारे पूर्वज छोटे-छोटे मुद्दों का कितनी गंभीरता से लेते थे। साथ ही हम ये महसूस कर सकते हें कि बो बड़े मुद्दों पर कितनी गहराई से सोचते होगे।

पाणिनी संस्कृत को शास्त्रीय संस्कृत या परम्परागत संस्कृत भी कहा जाता है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, वैदिक संस्कृत के संदर्भ में कि ये वही

भाषा है जिसमें हमारे वेद लिखे गए है। आगे मैं वेद शब्द के अर्थ पर बात करना चाहता हूँ। ये हमें पाणिनी के काम को समझने में मदद करेगा।

वेदों (जिन्हें श्रुति भी कहा जाता है) को चार भागों में बांटा गया हैः-

1. समहिता (या मंत्र) - इनमें चारों वेदों (ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद) को शामिल किया गया है। 'समहिता' का अर्थ होता है. संग्रह। पहले भी कहा जा चुका है- ऋगवेद प्रार्थनाओं का संग्रह है। सबसे प्रमुख वेद ऋगवेद है, जो छंदों में लिखा गया है, जिन्हें 'ऋचा' कहते हैं, सामवेद संगीत पर आधारित है। यजुर्वेद कि दो तिहाई ऋचाएं ऋगवेद से ली गई है।

2. ब्राह्मण - जो गद्य में लिखे गए है जिनमें विभिन्न यज्ञों को करने के तरीके दिए गए है। हर ब्राह्मण का संबंध कुछ समहिताओं से है।

3. अरण्यक - ये असल में ''अरण्य वेद'' हैं। जो बौद्धिक व दार्शनिक विचारों का खजाना है।

4. उपनिषद - ये हमारे दार्शनिक विचारों के विकास से जुड़े है।

उल्लेखित ऊपर सारे जिन्हें समहिता, ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद के नाम से जाना जाता है, उन्हे सामूहिक रूप से वेद या श्रुति कहा जाता है। ब्राह्मण जो समहिताओं के बाद लिखे गए है, उनकी भाषा समहिताओं से कुछ भिन्न भी है। जिस समय ये लिखे गए उस समय संस्कृत का रूप दूसरा था। इसी प्रकार से, अरण्यक, ब्राह्मण से थोड़ी भिन्न है। वेदों का अंतिम हिस्सा उपनिषेद है और इनकी भाषा संस्कृत के शुरूआती वेदों से एकदम अलग है। उपनिषदों के लेखन में प्रयुक्त किया गया संस्कृत पाणिनी संस्कृत के बहुत करीब है। पाणिनी के अध्टाध्यायी के लेखन के बाद से गौर-वैदिक संस्कृत साहित्य का लेखन भी पाणिनी व्याकरण के अनुसार होने लगा। वैदिक साहित्य संपूर्ण संस्कृत साहित्य का 1 प्रतिशत ही है। संस्कृत का 99 प्रतिशत साहित्य गैर-वैदिक संस्कृत साहित्य है।

महाभारत के कुछ हिस्सों का लेखन पाणिनी से पहले हुआ है क्योंकि पाणिनी ने अष्टाध्यायी में महाभारत का उल्लेख किया है बाद में महाभारत के इन हिस्सों को पाणिनी व्याकरण के अनुसार बदल दिया गया। अब संस्कृत के गैर-वैदिक साहित्य का लेखन पाणिनी व्याकरण के अनुसार हो रहा है। कुछ शब्दों व अभिव्यक्तियों को छोड़कर के अनुसार हो रहा है। कुछ शब्दों व अभिव्यक्तियों को छोड़कर जिन्हें अपभ्रंश कहा जाता है, जो कुछ कारणों से पाणिनी व्यवस्था में फिट नहीं बैठते ।

यहां तक कि यह स्वीकार्य नहीं है कि ऋगवेद कि भाषा बदली जाए और इसे पाणिनी व्याकरण के अनुसार किया जाय। पाणिनी या कोई भी ऋगवेद को नहीं छू सकता था क्योंकि यह सबसे पवित्र ग्रंथ है, जिसके भाषा को बदलना स्वीकार्य नहीं है। 2000 ई. पू. के आस-पास निर्माण के बावजूद ऋगवेद का लेखन ठीक काबू हुआ कहा नहीं जा सकता क्योंकि इसका लेखन गुरू-शिष्यों के मौखिक परंपरा के आधार पर हुआ है।

वैदिक साहित्य का निर्माण पाणिनी व्याकरण के अनुसार नहीं हुआ है। जबकि गैर-वैदिक संस्कृत साहित्य का निर्माण पाणिनी व्याकरण के अनुसार हुआ है, जिसमें हमारे सारे बौद्धिकों ने अपना वैज्ञानिक कार्य किया है इसकी एकरूपता और व्यवस्थित रूप ने बड़े बौद्धिकों को अपनी बात आसानी से व्यक्ति करने का मौका दिया और यह विज्ञान के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण आवश्यकता थी।

आगे मैं ये कहना चाहता हूँ कि मौखिक भाषा बहुत महत्त्वपूर्ण है लेकिन मौखिक बोलियां हर 50 से 100 किलोमीटर पर बदल जाती हैं जिनमें कोई एकरूपता देखने को नहीं मिलती। परंपरागत संस्कृत जैसी लिखित भाषा जिसमें उस समय के बौद्धिक अपनी बात दूसरों से कह सकते थे। यह विज्ञान के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ, जो पाणिनी कि महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। प्राचीन भारत में विज्ञान के विकास के बाद मै अब भरतीय दर्शन पर बात करना चाहता हूँ। सामान्यतः माना जाता है कि परम्परागत भारतीय दर्शन के छः वर्ग और गैर-परंपरागत भारतीय दर्शन के तीन स्कूल है। छः परम्परागत वर्ग है- न्याय वैशेषिक, सांख्य, योग वर्ग पूर्व मिमांसा और उत्तर मिमांसा। गैर-परम्परागत वर्ग हैरू बौद्ध धर्म, जैनधर्म और चार्वाक। परंपरागत भारतीय दर्शन का शष्टदर्शन के नाम से भी जाना जाता है। शष्टदर्शन पर संक्षिप्त चर्चा इस प्रकार से है।

1. न्याय . ये एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रतिपादित करता है इसके अनुसार बिना तर्क व अनुभव के कुद भी स्वीकार नहीं किया जा सकता। जिसे बाद में न्याय वर्ग के दार्शनिकों ने खण्डित कर दिया।

2. वैशेषिक . इसमें परमाणु सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया है।

3. सांख्य . यह न्याय वैशेषिक व्यवस्था के सत्तामीमांसा को प्रस्तुत करता है। सांख्य दर्शन पर बहुत ही कम साहित्य बचा है और इसके मूलभूत सिद्धांतों पर विवाद भी है। कुछ कहते है कि यह द्विआर्थी है और जबकि कुछ इसे एकार्थी मानते हैं इसके दो मुख्य प्रतीक है- एक-पुरूष, दूसरी-प्रकृति।

4. योग - यह शारीरिक व मानसिक अवस्था को प्रस्तुत करता है।

5. पूर्व मीमांसा ;जिसे संक्षिप्त में मीमांसा कहा जाता है). यह आध्यात्मिक व सांसारिक लाभ के लिए योग पर जोड़ देता है।

6. उत्तर मीमांसा . यह ब्राह्मण पर जोड़ देता है।

ऐसा कहा जाता है कि परंपरागत और गैर-परम्परागत दर्शन व्यवस्था इस मामलें में एक दूसरे से अलग है कि परम्परागत दर्शन व्यवस्था वेदों के आधिपत्य को स्वीकार करता है जबकि गैर-परम्परागत दर्शन व्यवस्था वेदों के आधिपत्य को स्वीकार नहीं करता।

इन सारी दर्शन व्यवस्थाओं पर विस्तृत चर्चा करने के बजाए में मुख्य रूप से न्याय और वैशेषिक पर चर्चा करना चाहता हूँ, जो एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं न्याय, दर्शन के अनुसार- कुछ भी तर्क और अनुभव के बिना स्वीकार्य नहीं है और यह स्पष्ट रूप से एक वैज्ञानिक सोच है। वहीं वैशेषिक परमाणु सिद्धांत को प्रस्तुत करता है जो प्राचीन भारत का भौतिकी था। शुरू में न्याय और वैशेषिक को एक ही व्यवस्था के रूप में देखा जाता था लेकिन भौतिकी सभी विज्ञानों के आधार में था। आगे जाकर वैशेषिक न्याय दर्शन व्यवस्था के अलग हो गया और एक स्वतंत्र दर्शन व्यवस्था के रूप में स्थापित हुआ। आगे कहा जा सकता है कि सांख्य दर्शन व्यवस्था, न्याय और वैशेषिक व्यवस्था से पुरानी है लेकिन इस संदर्भ में बहुत कम साहित्य ही बचा है हालांकि कहा जा सकता है कि सांख्य दर्शन ने न्याय-वैशेषिक वैज्ञानिक दर्शन के लिए एक भौतिक आधार का काम किया था।

न्याय-वैशेषिक व्यवस्था को दो भागों में बांटा गया है-

1. यथार्थवाद 2. द्वैतवाद (या बहुलवाद)

यह शंकराचार्य के अद्वेत वेदान्त का विरोधी है जो एकत्ववादी है और जिसके अनुसार संपूर्ण संसार एक भ्रम है, माना है। 'अनेकवाद' और 'एकत्ववाद' एक दूसरे के विरोधी है। 'एकत्व' का अर्थ है- संपूर्ण संसार में एक ही तत्व एक ही सत्ता हैं शंकराचार्य का दर्शन भी यही कहता है कि - संपूर्ण संसार में एक ही सत्ता है। इस ब्रह्माण्ड कि चीजें- टेबल, ग्लास, पेन, कमरा आदि असल में ये सब एक ही हैं इनका अलग दिखना एक भ्रम कि स्थिति है। जबकि दूसरी तरफ न्याय-वैशेषिक दर्शन व्यवस्था के अनुसार इस संसार में कई वास्वतिक सत्ताएँ या तत्व हैं और यह संसार किसी एक सता के कारण नहीं चल रहा बल्कि उन तमाम विभिन्न तत्वों के संयोजन से चल रहा है। जैसे- टेबल, किताब, कमरा, मानव आदि। अतः न्याय व्यवस्था बहुलवादी है, ना कि एकत्ववादी।

आधुनिक भारत में विज्ञान की स्थिति

जैसा कि मैंने पहले कहा कि एक समय भारत विश्वभर में विज्ञान में अग्रणी था। प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा, उज्जैन जैसे विश्वविद्यालयों में अरब और चीन से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते थे।

हालांकि आज हमें ये झिझक के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि पश्चिम की तुलना में हम आधुनिक विज्ञान में हम पीछे है। इसमें कोई शक नहीं कि हमने दुनिया को कई महान वैज्ञानिक व गणितज्ञ दिए है। जैसे- सी.वी.रमन, चंद्रशेखर, रामानुजन, एस.एन.बोस, जे.सी.बोस, मेघनाद शाह आदि लेकिन अब ये सभी इतिहास हो गए है।

हालांकि आज भी सिलिकॉन वैली (कैलीफॉर्निया) में कई भारतीय वैज्ञानिक कार्यरत है, विशेषतौर से आईटी मे। अमेरिकी विश्वविद्यालयों में विज्ञान व गणित विभाग में कई भारतीय प्रोफेसर है। हमारे मन में इसको लेकर कोई हीनता नहीं होनी चाहिए कि भारत आधुनिक समय में विज्ञान के क्षेत्र में पश्चिम देशों से पिछड़ा हुआ है। बल्कि इसके पीछे और कई कारण है। हमारे पास एक मजबूत वैज्ञानिक सभ्यता है और ऐसा ज्ञान जो हमें आगे भी नैतिक साहस देता रहेगा और भविष्य में भारत को आगे ले जायेगा। यहां पर एक सवाल ये भी उठता है कि जब बहुत पहले हम विज्ञान के क्षेत्र में इतने आगे थे तो अचानक से हम इतने पीछे कैसे हो गए ? इसे नीधम प्रश्न भी कहते है। इंग्लैण्ड के प्रो. नीधम प्रखर जैव-रसायन शास्त्री थे। जिन्होंने बाद में चीनी सभ्यता का गहरा अध्ययन किया और चीन में विज्ञान का इतिहास विषय पर उन्होंने कई संस्करणों में किताबें लिखी है। उन्होंने अपने एक खण्ड में यह सवाल उठाया है कि एक समय में जब चीन विश्वभर में विज्ञान के क्षेत्र में बहुत आगे थे। जहां प्रिंटिंग प्रेस, कागज़ आदि का सबसे पहले आविष्कार हुआ था, वो अचानक से विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ कैसे गया और जहां पर कोई तीव्र औद्योगिक विकास देखने को क्यों नही मिला। ठीक यही सवाल भारत के संदर्भ में भी उठता है। मेरे दिमाग में इस सवाल का जवाब ये है कि - ''आवश्यकता आविष्कार की जननी है।'' हम वैज्ञानिक विकास में उस स्थिति तक पहूँच गए है, जहां हमें अपने जीवन को चलाने के लिए किसी अतिरिक्त अविष्कार कि आवश्यकता नहीं है। वहीं यूरोप कि विपरीत भौगोलिक परिस्थितियां उसे लगातार ये प्रेरित करती है कि वो विज्ञान के क्षेत्र में कुछ नया करे।

भारत में संतुलित तापमान पाया जाता है और सिर्फ गर्मी में ही फसले। जिन्हें खरीफ फसलें कहते हैं नही उगाई जाती बल्कि यहां सर्दी में भी फसले (जिन्हें रबी फसले कहते हैं) उगाई जाती है। वहीं दूसरी तरफ यूरोप में विपरीत जलवायु पाई जाती है। जहां की जमीन साल में 4 से 5 महीने तक वर्फ से ढ़की रहती है। अतः यूरोप जीवन जीने के मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, लगातार विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोग कर रहा है।

निष्कर्ष

अंत में व्यापक समस्याओं के समाधान के लिए हमें विज्ञान के क्षेत्र में पश्चिम की बराबरी करनी होगी। प्राचीन भारत में हर जगह पर विमर्श या शास्त्रार्थ होते थे, जिनमें मुक्त रूप से नए विचारों पर चर्चा होती थी। तथा जिसमें एक बड़ी विचारधारा का बड़ी सभा में खण्डन किया जाता था। उस समय विचारों व अभिव्यक्तियों कि स्वतंत्रता ने विज्ञान के विकास में अहम भूमिका अदा की। यहां तक कि विज्ञान भी स्वतंत्रता कि मांग करता है। सोचने कि स्वतंत्रता और विरोध करने कि स्वतंत्रता। महान वैज्ञानिक चरक ने अपनी पुस्तक चरक समहिता में कहा भी है कि विज्ञान के विकास के लिए वाद विवाद व विमर्श अति आवश्यक है। सिर्फ विज्ञान की सहायता से ही हम गरीबी, बेरोजगारी जैसी बड़ी सामाजिक समसयाओं को खत्म कर सकते है ।

सन्दर्भ

1. संस्कृत साहित्य सोपान (गूगल पुस्तक य लेखिका – कौमोदकी)
2. भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्कृत पर आधारित शोध प्रबन्धों की निर्देशिका (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान)
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास
4. संस्कृत विकिपुस्तक
5. विकिस्रोत संस्कृत